National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 05-06
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. मथुरा इमलाल
सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग,
डी.एस.बी. परिसर,
नैनीताल

Correspondence:
डॉ. मथुरा इमलाल
सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग,
डी.एस.बी. परिसर,
नैनीताल

साहित्य और समाज का सम्बन्ध

डॉ. मथुरा इमलाल

शोध सार

साहित्य समाज के विविध भाव एवं नित्य नवीन रहने वाली चेतन की अभिव्यक्ति है। साहित्य में प्रचलित प्रत्येक अवधारणा का अपने समाज और परिवेश के साथ गहरा सम्बन्ध होता है। साहित्य और समाज के सम्बन्धों की चर्चा आज पुरजोर के साथ जोरों पर है वास्तव में मानव जीवन के स्नेह पूर्ण रागात्मक विकास जो समाज में जन्म लेकर फलते-फूलते हैं और साहित्य और समाज का गहरा सम्बन्ध है वह एक-दूसरे पर निर्भर हैं। साहित्य का समाज के बिना कोई महत्व नहीं है और समाज का साहित्य के बिना साहित्यकार समाज के बाह्य और आंतरिक दोनों घटकों को उद्घाटित करता है इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इसी कारण साहित्यकार समाज में घटित आम जनता के सुख-दुःख को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त करता है। साहित्य में प्रचलित प्रत्येक अवधारणा का अपने समाज और प्रदेश के साथ गहरा सम्बन्ध होता है। हिंदी साहित्य के विशेष संदर्भ में बात की जाए तो आदिकाल से लेकर आधुनिक काल आदि धाराओं का अपना एक सामाजिक संदर्भ है। साहित्यकार समाज को अपनी कृति का मूल स्रोत बनाता है और साहित्यिक, सामाजिक मूल्य, नैतिक और आदर्श को स्थापित करने में मदद करता है।

मुख्य शब्द - समाज, आदर्श, नैतिकता, घनिष्ठ, मानव।

साहित्य शब्द – स+हित+य के योग से बना है; जिसका शाब्दिक अर्थ है एकत्र होना अर्थात् गद्य एवं पद्य का वह सम्मिलित रूप जो हमें ज्ञान या शिक्षा प्रदान करता है, उसे साहित्य कहते हैं। "साहित्यस्य भावः साहित्यम्" अर्थात् जिस विद्या में प्राणी मात्र का हित समाहित हो उसे साहित्य कहते हैं। साहित्य मानव समुदाय के विविध मनोभावों एवं नित-नवीन रहने वाली मानसिक अंतर्चेतना की अभिव्यक्ति है तभी तो किसी काल विशेष के साहित्य के द्वारा तद्युगीन मानव समाज को समग्रतः जाना जाता है। दूसरे शब्दों में किसी काल विशेष के साहित्य में दृष्टिगत मूल प्रवृत्तियां तत्कालीन परिस्थितियों के सापेक्ष होती है। यह सिद्धान्त इस बात की आवश्यकता पर बल देता है कि साहित्य के प्रेरक तत्व के रूप में हम यूजीन प्रदेश को अवश्य जान लें। आदिकालीन साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। इस काल के साहित्य में जो प्रमुख विशेषताएं उपलब्ध हो रही हैं वे तद्युगीन परिस्थितियों से विकसित हुई है। अतः आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित होने से पूर्ण कारण, स्वरूप, तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदेश के साथ-साथ साहित्यिक वातावरण को जानना अपरिहार्य है। साहित्य और समाज का गहरा सम्बन्ध है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जो समाज के रीति-रिवाज, मूल्य, समस्याओं और आकांक्षाओं को दर्शाता है और यह समाज को प्रतिबिंबित करने के साथ-साथ उसे जाकर देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य समाज का आईना है जो उसे समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को दर्शाता है। साहित्य का उद्देश्य धार्मिक श्रेष्ठ की अपेक्षा मानव में समानता का गुण विकसित करना होता है। साहित्य के माध्यम से हम समाज के बारे में जान सकते हैं और सुधार के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

"साहित्य समाज का दर्पण है" यह कथन महावीर प्रसाद जी का है उनका मानना था कि साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है और समाज में जो भी घटित हो रहा है उसका प्रतिबिंब साहित्य में दिखाई देता है। साहित्य, सामाजिक मूल्य, नैतिकता और आदर्शों को स्थापित करने में मदद करता है। साहित्य और समाज का सम्बन्ध इस बात से और ज्यादा पुष्ट हो जाता है कि साहित्य समाज के आज और कल को भी प्रभावित करता है। साहित्य लोगों को दूसरों के सहानुभूति और समझ विकसित करने में मदद करता है। समाज के परिवर्तन में साहित्य सहज रूप में अपनी भूमिका निभाता है। इसी संदर्भ में डॉ. नगेन्द्र साहित्य का समाजशास्त्र नामक ग्रंथ में लिखते हैं कि - कल और समाज के परस्पर सम्बन्ध की उपेक्षा नहीं की जा सकती है क्योंकि कल स्वयं ही एक सामाजिक घटना है। महान कला मानव जीवन की सार्वभौम सत्ता की प्रतिष्ठा करती है, किंतु इस सार्वभौम रूप सिद्धि विशेष के द्वारा ही है क्योंकि कल का सृष्टा कलाकार या एक विशेष युग एवं समाज, एक विशेष संस्कृति और वर्ण के साथ सम्बन्ध होता है।

साहित्यकार अपने समय और समाज का प्रतिनिधि होता है अतः वह सामाजिक परिस्थितियों को तथा उनको प्रभावित करने वाली घटनाओं के बारे में लिखता है। साहित्यकार साहित्य में ही समस्त अच्छाइयों और बुराइयों का वर्णन करता है। उनका यह कर्त्तव्य है कि समाज के प्रति जागरूक रहें और उस वर्ग की आवाज को अपना स्वरूप प्रदान करें जो समाज से सबसे अधिक प्रभावित होता है वह अपने जीवन के अनुभव के अनुसार समाज का आंकलन करता है और अपनी लेखन के माध्यम से समाज में जागरूकता ला सके। जिन्हें सर्वोत्तम शिक्षा और सर्वोत्तम मानसिक शक्तियां मिली हैं उन पर समाज के प्रति उतनी ही जिम्मेदारी भी है।

साहित्य और समाज के सम्बन्धों की बात हम जब-जब करते हैं तब-तब आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का स्मरण स्वयं ही हो जाता है। हिंदी साहित्य इतिहास परंपरा में सर्वोच्च स्थान आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी एवं उनके द्वारा रचित हिंदी साहित्य का इतिहास को जाता है। हिंदी साहित्य का इतिहास 1929 में नागरिक प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिंदी शब्द सागर की भूमिका के रूप में लिखा गया है जिसे आगे परिवर्तित एवं परिष्कृत करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया गया जिसकी आरंभ में ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य और समाज के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि - "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्तियों, संचित प्रतिबिंब होता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों का सामन्जस्य सामाजिक परिस्थितियों के साथ करते हुए लिखना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।" जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियों के अनुसार ही होती है। हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन की वास्तविक शुरुआत 19वीं शताब्दी से हुई मानी जाती है परन्तु इससे पूर्व भी कुछ रचनाएं ऐसी प्राप्त होती हैं जिनमें व्यवस्थित कालक्रम, विभिन्न प्रवृत्तियों के रेखांकन का पूर्णतया अभाव है।

आत्मा और शरीर का जो सम्बन्ध है वहीं सम्बन्ध साहित्य और समाज का होता है। समाज की भावनाएं अपेक्षाएं ही साहित्यिक विचारधारा के रूप में समाज में साहित्यकारों को जन्म देती है। साहित्यकार समाज से ही अपने साहित्य की विषय वस्तु ग्रहण करता है इसलिए समाज और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है। साहित्य का उद्देश्य ही समाज का कल्याण होना चाहिए इसलिए साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज का चित्रण करता है। साहित्य और समाज एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित रहते हैं।

सन्दर्भसूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
- हिंदी साहित्य का समाजशास्त्र डॉ. नगेन्द्र, बनी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- नया साहित्य, नया प्रश्न, नंददुलारे बाजपेई, पानी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, विश्वनाथ त्रिपाठी।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य का अद्यतन इतिहास, डॉ. विमलेश शर्मा, ज्ञान वितान प्रकाशन, गांधीनगर, अजमेर।